वैदिक साहित्य में नारी

[गवेषणात्मक लघु, प्रबन्ध]

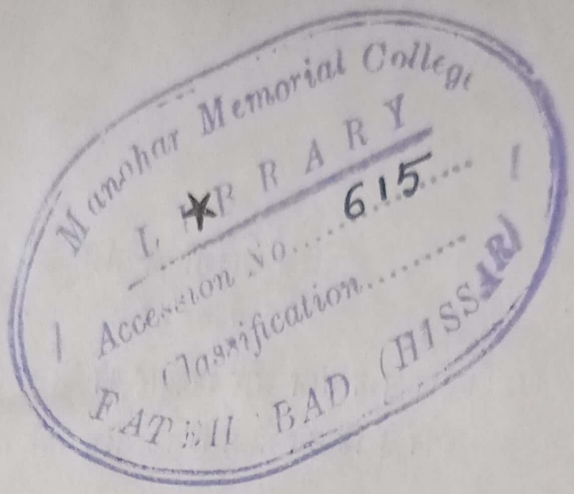

प्रशान्तकुमार वेदालंकार, एम. ए.

प्राध्यापक हिन्दी-विभाग, पी. जी. डी. ए. वी. कॉलेज

नयी दिल्ली

★

वासुदेव प्रकाशन दिल्ली–९

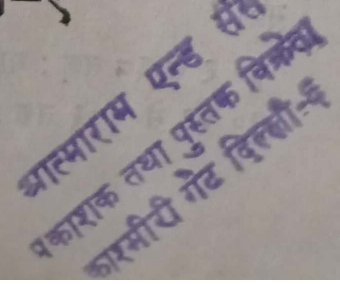

954.01

विषय-सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ
	प्राक्कथन	५—८
प्रथम अध्याय—	नारी : कन्या रूप में	९—३१
	१. कन्या की कामना। २. कन्या-वध। ३. कन्या का नाम। ४. कन्या और उसके साम्पत्तिक स्वत्व। ५. ब्रह्मचर्य-काल—(क) कन्या का उपनयन संस्कार। (ख) स्त्री की शिक्षा का अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व। (ग) कन्याओं की शिक्षा के विषय। (घ) ब्रह्मचर्य-काल का एक महान् व्रत। (ङ) सहशिक्षा का विरोध।	
द्वितीय अध्याय—	गृहस्थाश्रम में प्रवेश	३२—५७
	१. प्रवेश-काल। २. प्रवेश-योग्यता। ३. साथी का चुनाव—(क, ख) साथी दूर-गोत्र एवं-दूर-देश का हो। (ग) साथी का चुनाव कन्या स्वयं करे। (घ) साथी के चुनाव में अभिभावकों की सम्मति। (ङ) योग्य-साथी। (च) अयोग्य-साथी। (छ) अयोग्य-कन्या। ४. विवाह के प्रकार। ५. विवाह-संस्कार। ६. विवाह में कन्या को दिया गया धन (दहेज)।	
तृतीय अध्याय—	पत्नी और घर	५८—६८
	१. गृहमन्दिर की पुजारिन अथवा गृहशासन की सम्राज्ञी। २. अर्थव्यवस्था का सम्यक् संचालन। ३. घर की स्वच्छता और भोजनादि का निर्माण। ४. पशुपालन और दुग्ध आदि पेय पदार्थों की व्यवस्थापिका। ५. चरखा-संचालन और वस्त्र निर्माण। ६. अतिथि-सेवा और दान देने की भावना। ७. वधू की महत्ता और उस केलिए मंगल-कामना।	

चतुर्थ अध्याय—पत्नी और पति ६६—८९

१. एक ही पति अथवा एक ही पत्नी रखने का अधिकार (तलाक-समस्या)। २. पत्नी के साम्पत्तिक स्वत्व। ३. पत्नी के प्रति पति का व्यवहार। ४. पति के प्रति पत्नी का व्यवहार। ५. दोनों के आनन्दमय जीवन-यापन केलिए मंगल-कामना। ६. दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध (संसार केलिए दोनों का परस्पर समान महत्त्व)।

पंचम अध्याय—नारी : जननी रूप में ९०—११४

१. नारी का एक महान् कर्तव्य (सन्तानोत्पत्ति)। २. गर्भाधान एवं गर्भावस्था : कुछ आवश्यक निर्देश। ३. माता और पिता की इच्छा के अनुसार पुत्र अथवा पुत्री की उत्पत्ति। ४. माता का महान् कर्तव्य। ५. माता के साम्पत्तिक स्वत्व। ६. माता-प्रतिष्ठा की पात्री।

षष्ठ अध्याय—विधवा और उसकी स्थिति ११५—१२३

१. दूसरे पति का अधिकार। २. सती-प्रथा। ३. विधवा के साम्पत्तिक स्वत्व।

सप्तम अध्याय - नारी और उसके सम्बन्धी १२४—१३५

१. वधू, सास और श्वसुर। २. भाभी, देवर और ननद। ३. पिता एवं पुत्री। ४. भाई और बहिन।

अष्टम अध्याय – शृंगार तथा वेष भूषा १३६—१४

१. अलंकार-धारण। २. वस्त्र-वैविध्य। ३. केश-प्रसाधन।

नवम अध्याय – नारी और यज्ञ १४१—१४

१. स्त्रियों की यज्ञों में उपस्थिति। २. नारी के बिना यज्ञ अपूर्ण। ३. स्त्री द्वारा यज्ञ का अनुष्ठान।

दशम अध्याय—नारी और उसकी स्वतन्त्रता १४८—१

१. परदा प्रथा का विरोध तथा सभाओं में भाग लेना। २. नारी की वीरता। ३ नारी और राजनीति।

एकादश अध्याय – अपना वक्तव्य १५६—१

परिशिष्ट १६९—१

१. आधार-ग्रन्थ। २. सहायक ग्रन्थ।